

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना: प्रकृति, समाज और वर्तमान संदर्भ

पृथ्वी राज, शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, चूरू (राजस्थान)

सारांश

वर्तमान समय में पर्यावरण संकट मानव सभ्यता के सामने एक गंभीर चुनौती बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और जैव-विविधता का ह्रास जैसी समस्याओं ने प्रकृति और मानव के संबंध पर पुनर्विचार की आवश्यकता उत्पन्न की है। हिंदी साहित्य ने विभिन्न कालखंडों में प्रकृति को केवल सौंदर्य के विषय के रूप में नहीं, बल्कि मानव जीवन और सामाजिक अस्तित्व से जुड़े महत्वपूर्ण तत्व के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना के स्वरूप और उसके वर्तमान संदर्भों का अध्ययन करना है। कविता, कहानी, उपन्यास और अन्य साहित्यिक विधाओं में प्रकृति संरक्षण, पर्यावरणीय संकट तथा मानव-प्रकृति संबंध की विविध अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं। साहित्य पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और जनजागरूकता उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि पर्यावरण चेतना केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय, मानवीय जीवन और सतत विकास से भी जुड़ी हुई है। अतः हिंदी साहित्य पर्यावरण संरक्षण की सामूहिक चेतना को विकसित करने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

मुख्य शब्द: पर्यावरण चेतना, हिंदी साहित्य, प्रकृति, पर्यावरण संकट, प्रकृति संरक्षण, सतत विकास, मानव-प्रकृति संबंध